Mahila college Dalmianagar
Department of History
B.A II (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date: 10/02/2021

इल्तुतमिश की उपलब्धियाँ :-

⇒ एक विजेता और संगठनकर्ता के रूप में इल्तुतमिश की उपरोक्त उपलब्धियाँ अत्यंत प्रभावशाली हैं। उसने एक असंगठित और निर्बल राज्य को न केवल शक्ति और सुदृढ़ता प्रदान की बल्कि उसके क्षेत्रों में भी पर्याप्त विस्तार किया और उसके विरोधियों की शक्तियों को कुचल डाला। इसमें कोई संदेह नहीं कि दिल्ली सल्तनत के आरम्भिक सुदृढ़ीकरण का काम इल्तुतमिश द्वारा ही सम्पन्न हुआ किन्तु इल्तुतमिश मात्र एक विजेता नहीं था अपितु एक योग्य प्रशासक भी था। उसी ने दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माण का काम आरम्भ किया। उसने अब्बासी खलीफा से एक मन्शूर अथवा स्वीकृति पत्र प्राप्त किया जिसके द्वारा उसे दिल्ली सल्तनत के सुल्तान के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। यह एक महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि अभी तक दिल्ली सल्तनत के स्वतंत्र अस्तित्व को वैधानिक रूप से स्वीकृति प्राप्त नहीं हो सकी थी। खलीफा के

स्वीकृति पत्र के इल्तुतमिश की स्थिति और भी सुदृढ़ हुई।
आन्तरिक प्रशासन के क्षेत्र में इल्तुतमिश का योगदान तीन क्षेत्रों में उल्लेखनीय है, इक्ताधारी, व्यवस्था मुद्रा प्रणाली एवं सैन्य संगठन।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि भारत में तुर्कों की सत्ता के विकास में इल्तुतमिश का उल्लेखनीय योगदान है। उसने नवजात दिल्ली सल्तनत को न केवल विघटन से बचाया बल्कि उसे एक सुदृढ़ अस्तित्व प्रदान किया और उसके क्षेत्रों का विस्तार किया। उसने मंगोल आक्रमण के भीषण संकट से दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित रखा जबकि मध्य एशिया में प्रायः सारे मुस्लिम राज्य मंगोलों के आगे नतमस्तक हो चुके थे। उसने दिल्ली सल्तनत की स्वतंत्रता को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता उपलब्ध करायी और उसके लिए एक कुशल प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण किया। ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की संस्थापना से जो काम आरम्भ हुआ था उसे इल्तुतमिश ने ही पूरा किया। इस तथ्य की पुष्टि हबीबुल्लाह द्वारा भी इन शब्दों में की गई है। अपनी सेना के साथ दिल्ली सल्तनत की सीमा और पहुँचा। चंगेज खाँ इस ओर ख्वारिज्म के राजकुमार मंगबरनी का पीछा करता हुआ आया था जो कि इल्तुतमिश से मंगोलों के विरुद्ध सहायता का आकांक्षी था।

इल्तुतमिश ने कूटनीति से काम लेते हुए मंगबरनी को कोई सहायता नहीं दी। उसके आचरण से चंगेज खाँ संतुष्ट रहा और उसने भी दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण नहीं किया, इस प्रकार यह भयंकर संकट आसानी से टल गया। इसका एक अन्य लाभ इल्तुतमिश को हुआ। मंगबरनी ने सिंध नदी के किनारे के क्षेत्र में कुबाचा की शक्ति को बहुत कमजोर कर दिया था। अतः इसका लाभ उठाकर कुबाचा पर इल्तुतमिश ने चढ़ाई कर दी और 1228 में कुबाचा को पराजित करके उसने सिंध और मुल्तान को भी दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत में सीमा में पहली बार उल्लेखनीय विस्तार हुआ।